स्नातक प्रतिष्ठा, खण्ड-प्रथम, विषय - मैथिली, प्रथम-पत्र
प्राध्यापक - प्रवीण कुमार 'प्रभंजन' (सं०प्रा०) मैथिली विभाग
उदयनाचार्य रोसड़ा कॉलेज, रोसड़ा (समस्तीपुर)

पाठ्यांश - ड. चतुर चतुर्भुज — कवि / साहित्यिक परिचय।

मध्यकालीन मैथिली साहित्येतिहासमे चतुर चतुर्भुजक परिचय एकटा कविक रूपमे होइत अछि। हिनक काव्य रचनाक अवलोकनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ई एक गीत उच्चकोटिक रचनाकार छलाह। हिनक काव्यक भाषा आ शैली पाँडित्यपूर्ण छनि। हिनक स्थिति कालओ परिचय विवादपूर्ण छनि। विभिन्न विद्वानक मतैक्य भिन्नता रहितो हिनक रचनाक आधार पर ई निश्चित करल जा सकैत अछि जे सोलहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध आ सतरहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मानल जा सकैछ।

चतुर चतुर्भुज मैथिली, संस्कृत आ बंगला भाषमे काव्य रचना करैत छलाह। हिनक काव्य रचनाक चमत्कारी वैशिष्ट्य गोविन्ददास आ उमापतिक समकक्ष मानल जाइछ। हिनक रचनाक पदलालित्य, अलंकारिक अभिव्यक्ति तथा सूक्ष्म कल्पनाक विश्लेषण कवि प्रतिभाक परिचय भेटैत अछि। पाठ्य ग्रंथ मे हिनक कुल 21 गोट गीत संकलित अछि। ई गीत सभ भाषागीत संग्रह, रागतरंगिणी आ हरगौरी विवाह नाटकसँ संग्रहित करल गेल अछि। हिनक सभ रचना रागताल-लयाश्रित अछि। मालव, विभास, मलारी, गौड़ मल्हार, आसावरी, गोपीवल्लभ इत्यादि राग निबद्ध हिनक सभ गीत उत्कृष्ट कोटिक अछि। उदाहरणार्थ —

मालव राग — "जओ हरि न जायब तौँ हे तसु गेहा।
आज कओनहु परि न धरति देहा॥
विरहानल तापित तनु काँती।
धरय धमित हाटक के भाँती॥"

विभास राग — "पाथरें गढ़ल हृदय तुअ मानिनि तीर्थें कुचगिरि परमाने।
की कुच सैल समाजें मलिन भेल के अवधारय जाने॥"

उपर्युक्त दून पद्यांशमे नायक नायिकाक मानमनोहारीक विरह व्याकुलताक चर्मोत्कर्ष वर्णन भेल अछि। उपमा-उपमेयक उत्कृष्ट वर्णन अछि। हिनक रचनाक धार्मिता कृष्ण काव्य परंपराक रूपमे राधा-कृष्णक वर्णन भेल अछि। प्राचीन गीत परंपराक अनुसारसँ हिनक किछु रचना भणिता युक्त अछि तऽ किछु भणिता मुक्त अछि।

पठित पाठ्यांश आ उपर्युक्त वर्णनसँ स्पष्ट होइछ जे कवि चतुर चतुर्भुज अपन जीवन राजाश्रयमे बिताओल। हिनक रचनामे भाव-भाषा, लालित्य-पाण्डित्य, शिल्प-शृंगार-अलंकार समायोजित अछि। राज्याश्रीत रचना होइतो भक्ति-भावक उद्घाटन विश्लेषण योग्य अछि। वस्तुतः चतुर चतुर्भुज मध्यकालीन प्राचीन गीत परंपराक उत्कृष्ट कवि छथि।

10-01-2021

पाठ्य सामग्री

स्नातक प्रतिष्ठा, खण्ड-प्रथम, विषय - मैथिली पत्र-प्रथम
प्राध्यापक - प्रवीण कुमार प्रभंजन (अ.प्रा.) मैथिली विभाग
उदयनाचार्य, रोसड़ा कॉलेज, रोसड़ा (समस्तीपुर)

पाठ्यांश - मनबोध आ हुनक कृष्णजन्म

मैथिली साहित्यक मध्यकालीन इतिहासमे कविवर मनबोधक योगदान अनुपम अछि। अठारहम शताब्दीक मैथिली काव्यधाराकेँ एकटा नव दिशा प्रदान कए 'कृष्णजन्म' महाकाव्य केँ रचना कएने अछि। एहिसँ पूर्व नाट्य संगीत गुम्फित शृंगार रस सिंचित काव्यधाराक रूपमे स्फुट रचना केँ सर्वप्रथम कथा-काव्यक रूपमे प्रस्तुत करलनि। पूर्वक शृंगारिक काव्य धारा केँ भक्ति व वात्सल्य रस युक्त भाव केँ अभिव्यक्ति प्रदान करलनि। मैथिलीमे प्रबन्धकाव्य लिखबाक परंपरा प्रारंभ करलनि। ओहि कृष्णजन्म महाकाव्य मे मैथिल संस्कृतिक विषय मे वर्णन करलनि अछि। एहि महाकाव्यक कथा वस्तु पौराणिक रहितो मैथिल समाजक अनुरूप व्यवहार, विधि उत्सव क्रीयाकलापक वर्णन विद्यमान अछि। भाषा सहज सरल सुबोधगम्य प्रयोग भेल अछि। जे 'कृष्णजन्म' महाकाव्य अथ ओकर रचयिता मनबोधक लोकप्रियता केँ प्रमान दैत अछि।

भाषाकविक रूपमे मनबोध केँ जानल जाइत अछि। कारण तत्कालीन साहित्यिक रचना संस्कृत निष्ठ प्रयोग सँ सर्वबोधगम्य नहि होइत छल से एहि कृष्णजन्म मे लोकभाषा लोककेँ अनुकूल वर्णन भेल अछि। लोकजीवनक सहज संस्कारक अभिव्यक्ति भेल अछि। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य अछि -

"कतोएक दिवस जखन बिति गेल।
हरि पुनु हथगर गोतुगर भेल॥
से कौन ठाम जतय नहि जाथि।
कय बेर अंगनहुँ सँ बहराथि॥"

अभिव्यक्तिक माध्यम ठेठ मैथिलीक प्रयोग कविवर मनबोधक भाषाक विशेषता अछि। लोकोक्तिक प्रयोग, उक्तिमे ग्राम्य जनजीवन गमैया शब्दक प्रयोग रोचकताक संग करलनि अछि।

वस्तुत: कवि मनबोध रचित कृष्णजन्म महाकाव्यक वर्णनसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे हिनक रचनाधर्मिताक भाषा लोकप्रियताक अनुकूल जनमानस केँ आकृष्ट करैत अछि। महाकवि विद्यापति आ चन्दा झाक बाद सर्वाधिक लोकप्रिय कविक रूप मे मनबोधक स्थान विशेष अछि। मैथिली साहित्यमे हिनका भाषाकविक संज्ञा देल जाइत अछि।